B - 4
L - 20
Indian Society

भारत में धर्म का बाजारीकरण

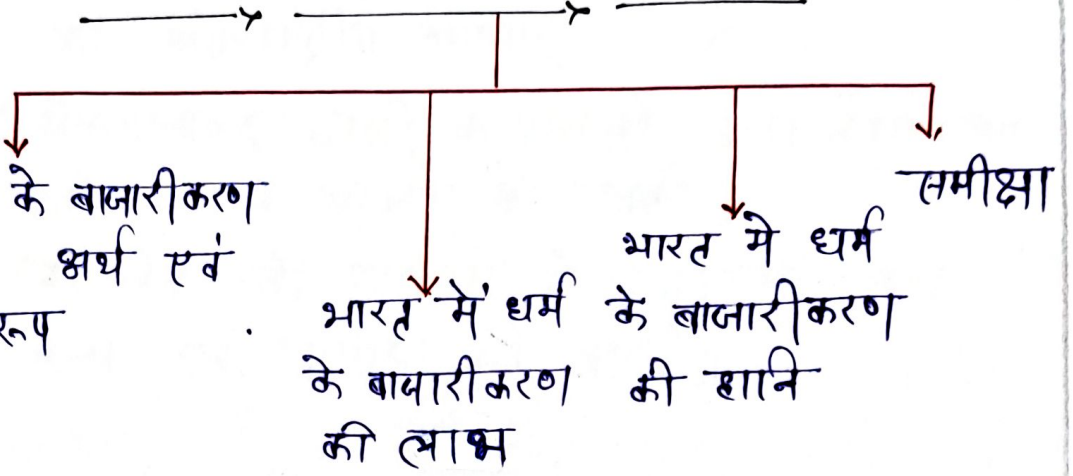

धर्म के बाजारीकरण का अर्थ :-

बाजार की शक्तियों द्वारा, लाभ की प्राप्ती हेतु धर्म को बाजार के वस्तु के रूप में प्रयोग, धर्म का बाजारीकरण कहलाता है।

भारत में धर्म के बाजारीकरण के स्वरूप :-

1. विभिन्न धार्मिक चैनल का उद्भव और धार्मिक कार्यक्रमों का प्रसारण।
2. धार्मिक कथाओं पर आधारित फिल्म, धारावाहिक, कार्टून शो आदि का निर्माण एवं प्रसारण
3. भजन एवं धार्मिक प्रवचन का व्यवसायीकरण

4. धार्मिक सेवा का व्यवसायीकरण एवं पूजा सामग्री का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार

(मैकडोनाल्ड जैसी कम्पनियों द्वारा नवरात्र बर्गर एवं नवरात्र थाली की बिक्री)

(इंटरनेट के माध्यम से पूजा में भाग लेना एवं प्रसाद की प्राप्ति)

PDF Note

भारत में विवाह

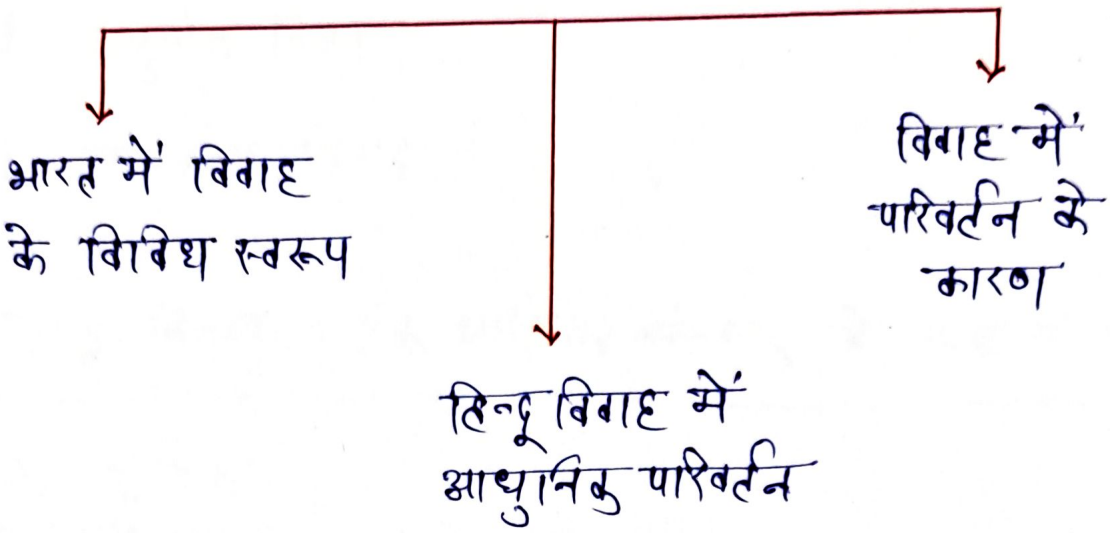

भारत में विवाह के विविध स्वरूप :-

- हिन्दुओं में विवाह
- मुस्लिमों में विवाह
- ईसाई में विवाह
- जनजातियों में विवाह

हिन्दू विवाह के प्रकार

1- ब्रह्म विवाह
2. देव विवाह
3. आर्ष विवाह
4. प्रजापत्य विवाह
5. गंधर्व विवाह
6. असुर विवाह
7. राक्षस विवाह
8. पैशाच विवाह

मान्य विवाह अमान्य विवाह

1. अनुलोम विवाह

2. प्रतिलोम विवाह

हिन्दू विवाह : एक धार्मिक संस्कार के रूप में :-

(A) भूमिका

हिन्दू समाज एक धर्म प्रधान समाज रहा है इसलिए इनमें विवाह संस्था भी धर्म से ओत-प्रोत रही है और हिन्दू विवाह को एक धार्मिक संस्कार माना जाता है।

(B) हिन्दू विवाह के धार्मिक संस्कारगत पक्ष :-

(1) हिन्दू विवाह का मुख्य आधार धर्म है क्योंकि-

1- हिन्दुओं में धार्मिक कर्तव्यों के पालन हेतु विवाह आवश्यक है।

2. पत्नी के साथ ही महायज्ञ संभव है।

3. मोक्ष की प्राप्ति हेतु संतान आवश्यक है और संतान हेतु विवाह आवश्यक है।

4. गृहस्थ आश्रम में प्रवेश हेतु विवाह आवश्यक है जहाँ (अर्थ एवं काम) के पुरुषार्थ की प्राप्ति संभव होती है

(b) हिन्दू विवाह में धार्मिक कर्मकांडो एवं नियमों की प्रधानता होती है जैसे -

1- विवाह हेतु पुरोहित आवश्यक

2- मंत्रोच्चारण आवश्यक

3- अग्नि के समक्ष सात फेरे (सप्तपदी)

(c) हिन्दू विवाह ईश्वर इच्छित जन्म-जन्मान्तर का संबंध एवं विवाह-विच्छेद अमान्य

समीक्षा

PDF Notes